



एग्री आर्टिकल्स

(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)

वर्ष: 06, अंक: 05 (सितम्बर-अक्टूबर, 2026)

www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध

© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

बैंगन की फसल में समेकित कीट प्रबंधन

*अभिषेक यादव¹, अनिल कुमार पाल² एवं संजीत कुमार³

¹विषय वस्तु विशेषज्ञ (कीट/सूत्रकृमि विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया, उत्तर प्रदेश

²विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान), कृषि विज्ञान केन्द्र, सोहांव, बलिया, उत्तर प्रदेश

³वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, कृषि विज्ञान केन्द्र, बलिया, उत्तर प्रदेश

(आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, कुमारगंज, अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत)

*संवादी लेखक का ईमेल पता: abhicoa2@gmail.com

हमारे देश में विभिन्न प्रकार की सब्जियाँ उगायी जाती हैं, जिसमें बैंगन की सब्जी सम्पूर्ण भारत में बड़े पैमाने पर खरीफ, रबी एवं जायद में उगायी जाती है। बदलते मौसम एवं जलवायु के कारण लगातार इसके उत्पादन में कमी होती जा रही है, जोकि मुख्यतः कीट द्वारा होता है। इनको नियंत्रित करना अति आवश्यक है, व इसके नियंत्रण के लिए आईपीएम पद्धति का चुनाव कर कम लागत में कीटों का प्रबन्धन कर सकते हैं।

बैंगन में लगने वाले प्रमुख कीट-

1 सफेद मक्खी - (बेमेसिया टबैसी)

क्षति का स्वरूप:- यह कीट पत्तियों के नीचे वाले हिस्से में पायी जाती है, जोकि पत्तियों से रस चूसती है। इस कीट के प्रौढ़ तथा शिशु धुंधले सफेद रंग के तथा पंख पारदर्शी और मोम से ढके होते हैं। ये आकार में बहुत छोटे तथा मुलायम होते हैं। वयस्क कीट 1 से 2 मि.मी आकार के हल्के रंग होते हैं। मादा कीट पत्तियों के निचली सतह पर हल्के पीले रंग का अण्डें देती है। अण्डें से 5-10 दिन में शिशु निकलते हैं इसके प्रौढ़ तथा शिशु दोनों पत्तियों से रस चूसते हैं तथा पत्ती के ऊपर मधु का स्राव छोड़ते हैं। जिससे काले रंग के कवक का आक्रमण हो जाता है। जिससे पत्तियों में प्रकाश संश्लेषण बाधित हो जाता है। इस कीट से फसल में पीला शिरा मोजेक नामक विषाणु जनित रोग फैलता है।

प्रबन्धन-

- ✓ गर्मी में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे जमीन में छिपे कीटों की अन्य अवस्था नष्ट हो जाए
- ✓ फसल अवशेष को खेत में जलाकर नष्ट कर देना चाहिए।
- ✓ कीट प्रतिरोधी प्रजातियों का प्रयोग करना चाहिए।
- ✓ इस कीट के नियंत्रण हेतु पीले चिपचिपे ट्रेप का प्रयोग करें।
- ✓ इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 6 मिली प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ✓ नीम सीड करनेल इक्स्ट्रेक्ट (एन०एस०के०ई०) 5 प्रतिशत का घोल बनाकर कर छिड़काव करना चाहिए।
- ✓ ट्राइजोफॉस 3-5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करते हैं।

2 बैंगन का तना एवं फलभेदक:- (ल्यूसिनोइडस अबॉनैलिस)

क्षति का स्वरूप:- प्रारम्भ में इस कीट की सूड़ी से अण्डें निकलने के बाद पौधे के कोमल तनों में छेदकर अन्दर प्रविष्ट करती है जोकि फूलों एवं फलों को ग्रस्त करती है। सूड़ी के शरीर पर बैंगनी रंग की धारियाँ पायी जाती हैं। प्रौढ़ अवस्था में यह 20 से 22 मिमी० का होता है, तथा यह कीट मध्यम आकार का होता है।

प्रबन्धन-

- ✓ गर्मी में खेत की गहरी जुताई करनी चाहिए जिससे जमीन में छिपे कीटों की अन्य अवस्था नष्ट हो जाए
- ✓ खेत को खरपतवार से मुक्त रखें जिससे कीटों का प्रकोप कम होता है।
- ✓ सुबह के समय वयस्क कीटों एवं उनके सुण्डियों को पकड़कर नष्ट कर देना चाहिए।
- ✓ पत्तियों एवं तनों पर अण्ड समूह दिखायी देते ही उसे तोड़ कर नष्ट कर देना चाहिए।
- ✓ इस कीट के सफल प्रबन्धन हेतु 10-12 फेरोमोन ट्रेप प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करना चाहिए।
- ✓ इस कीट के नियंत्रण हेतु बैसिलस थूरिजिएनसिस एक लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करके नियंत्रित कर सकते हैं।
- ✓ स्पाइनोसेड 45 एस.एल. 200-250 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करके नियंत्रित करते हैं।

- ✓ इमाममेकितन बेन्जोएट 5 एस.जी. 500 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करके नियंत्रित कर सकते हैं।
- ✓ इन्डोक्साकार्ब 14.5 एस.सी. 175 –200 मिली प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करके इस कीट नियंत्रित कर सकते हैं।

(3) लाल मकड़ी :- (टेट्रानिक्स अरटिसी)

क्षति का स्वरूप:- यह चतुष्पदीय कीट मुख्यतः लाल रंग के छोटे कीट होते हैं जोकि समूह में पाये जाते हैं। यह कीट पत्तियों एवं तने में जाल बनाकर उससे रस चूसते हैं जिसके कारण फसल पर लाल धब्बे दिखाई देते हैं।

प्रबन्धन:-

- ✓ डाईकोफॉल 2 मिली प्रति पानी का छिड़काव करना चाहिए।
- ✓ डब्लू डी जी सल्फर 2 ग्राम प्रति लीटर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

(4) बैगन की पत्तियों का फुदका (जैसिड़ या लीफ हापर)

क्षति का स्वरूप:- यह हरा एवं हल्के पीले रंग का त्रिकोणीय कीट होता है। प्रजातियों के आधार पर छोटे, बयस्क एवं तथा शिशु पौधों कोमल भागों जैसे पत्तियों तनों एवं फलियों आदि से रस चूसते हैं। प्रभावित पत्तिया पीली होकर नीचे की तरफ मुड़ जाती हैं। मृदा कीट पत्तियों के मध्य शिराओं में अण्डें देती हैं, जिससे 4-8 दिन में शिशु निकलते हैं। ये शिशु प्रायः 20 से 25 दिन तक फसल से रस चूसते हैं। सामान्य रूप से एक वर्ष में इस कीट की 6 पीढ़ियाँ पायी जाती हैं।

प्रबन्धन:-

- ✓ एनाग्रस फलैवीयोलस और स्टेथिनियम हड्डों नामक परजीवी प्रजातियों का उपयोग इस कीट की आबादी को नियंत्रित करने के लिए करते हैं।
- ✓ जैविक नियंत्रण आधारित दवा नीम का अर्क 5 प्रतिशत या नीम का तेल 100 मिली पानी में छिड़काव करें।
- ✓ फुदका कीटों के प्रकोप को कम करने के लिए इण्डोक्साकार्ब 14.5 ई.सी. की 200 मिली. प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

5 एफिड या माहू (एफिस गोसिपी)

क्षति का स्वरूप:- इस कीट के प्रौढ़ व शिशु पोथों के विभिन्न भागों से रस चूसकर उन्हें नुकसान पहुँचाते हैं। लगातार नुकसान रहने पर पोथों के विभिन्न भाग चिपचिपे हो जाते हैं। जिन पर काला कवक लग जाता है। अतः जिसके कारण पौधे कमजोर हो जाते हैं, तथा पैदावार में भी कमी होती है।

प्रबन्धन:-

- ✓ इस कीट के नियंत्रण हेतु पीले चिपचिपे ट्रेप का प्रयोग करें।
- ✓ एफिड की रोकथाम में कोक्सीनेला नामक परभक्षी कीट काफी प्रभावी पाया गया है।
- ✓ नीम सीड करनेल इक्सट्रेक्ट (एन०एस०के०ई०) का 5 प्रतिशत घोल बनाकर कर छिड़काव करना चाहिए।
- ✓ इमिडाक्लोप्रिड 17.8 एसएल 6 मिली प्रति 15 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें।
- ✓ ट्राइजोफॉस 3-5 मिली प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।